।। बिस्वास को अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ बिस्वास को अंग लिखंते ||

|| सवईयो इंद व छंद ||

तेरे किये कछु होवत नाही || सोच करे किम जीव अग्यानी ||
कीडी कुं कण दिये मण कुंजर || देहे को संग सो चिठी लिखानी ||
हंस कूं मोती दिये सिंघ माटी || आग चिकोर नित उठ ठानी ||
सोच विचार कहे सुखदेव जी || ग्यान बिचार रहो सुखमानी ||१||

(सतगुरू सुखरामजी महाराज मनुष्यो को विश्वास रखने के बारे मे कहते है,कि)अरे तुम्हारे करने से कुछ भी नही होता है,अरे अज्ञानी,तुम फिक्र किसलिए कर रहे हो । अरे,वह सबको खाने के लिए देता है ।(वह जिसका जिसका जैसा जैसा आहार है,वैसा वैसा उसी के अनुसार)चीटी को कण कौन देता है,तो हाथी को मण देता है । उसने जैसा जैसा शरीर दिया है,वैसा वैसा उस देह के अनुसार,उसे आहार मिलने के लिए जिस दिन दिया,उसी दिन उस देह के साथ ही आहार पाने की चिटठी लिख दी ।(उस लिखी हुयी चिठ्ठी मे तुम कितने भी उपाय किये,तो भी कम या अधिक नही हो सकता है ।)देखो,राजहंस मोतीही खाता है ।(उस हंस का एक दिन का चारा,एक लखपती साहुकार की इस्टेट की उसके(लखपती सेठके पुर्वज ने कमाई हुयी इस्टेट,उस हंस का एक दिन का चारा खाने के लिए उसे पूरी नही होगी । यदि हंस कहेगा,कि मै रूपया कमाकर मोती खरीदकर खाऊँगा,तो वह अपने खाने भर रूपया कमा सकेगा क्या? तो उसे भी खाने के लिए)मोती देनेवाला देता ही है),फिर तुम्हे भुखा रखेगा क्या ?)और सिंह मांस खाता है ।(सिंह घास-रोटी या फल फूल नही खाता है,तो उसको) (सिंह को)मांस भी खाने के लिए समय पर देता है । (असली सिंह मरे हुए प्राणी का मांस नही खाता है । उस प्राणी का जीव निकल जानेपर वैसे ही छोडकर चला जाता है ।)और चकोर पक्षी नित्य उठकर आग ही खाता है । (तो उसे भी समय पर खाने के लिए आग देता ही है । फिर तुम्हे अन्न नही देगा क्या?)सतगुरू सुखरामजी महाराज विचार करके कहते है, कि तुम भी ऐसे ज्ञान का विचार करके तुम भी सुख मान कर रहो ||१||

अनड आकास जो सेंस धर हेटे || इजगर कूं राम देहे भख आनी ||
मुनिसो रिष गुफा बन तापे || ताहि की गम लहे हर जानी ||
जुग सो जान अनंतर हुवा || चून दयाल दियां हर जावे ||
लानत तोह कहे सुखदेवजी || जीव की द्रिढता तोय न आवे ||२||

अनड पक्षी जो आकाश मे रहता है,उसे भी खाने के लिए नही पहुँचाता है ।(अनड पक्षी आकाश मे ही रहता है । वह पृथ्वी पर कभी भी नही बैठता है,वह पृथ्वी से इतनी ऊँचाई पर रहता है,कि उसकी मादी अण्डा देती है,तो वह अण्डा पृथ्वी पर गिरते समय रास्ते मे ही पककर,फूटकर पृथ्वीपर आने से पहले ही,उस अनड पक्षी के बच्चे को पंख

निकलकर,वह उडने योग्य हो जाता है और वह बच्चा अपने खाने के लिए हाथी को उठाकर उड जाता है और वह फिर से पृथ्वी पर कभी भी नही आता है ।)तो उसे भी वही उपर ही खाने के लिए देता है । और शेष पृथ्वी के नीचे है,तो उसे भी खाना पहुँचाता है और अजगर एक ही जगह पर पडा रहता है ।(अजगर अपने भक्ष को खोजने के लिए कही भी नही जाता,वह पास मे आये हुए जानवर पर झपट कर उसे पकडता नही,वह सिर्फ मुँह खोलकर पडा रहता है ।) उसके मुँख मे भक्ष अपने आप आकर पडता है ।) मुनी और ऋषी वन मे,पहाडो पर,गुफाओ बैठे रहते है,उनकी भी खबर वह लेकर उन्हे भी भूखा नही रखता है । हम(सभी जीवो को) अनन्त युग हो गये,तो भी वह दयाल हमे आकर प्रति दिन खाना दे ही रहा है। सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि अरे जीवो तुझे लानत है,कि तुम्हे अभी भी उसका पक्का मजबूत भरोसा नही आता है। ।।२।।

ऊठत धांह पुकारत डोले सो ।। कोन भरे नर पेट जमेरो ।।
त्रिस्ना तोख लियां गळ डोले ।। माया के संग रहे नित चेरो ।।
आठ मास नव गर्भ मे दीया ।। काहा धन संग कहा जुं डेरो ।।
सोच बिचार कहे सुखदेवजी ।। गोऊँ चाबे सोई सीचे हे बेरो ।।

तुम(एकदम)सुबह उठते ही चिल्लाते फिरते हो और कहते हो,कि मेरा पेट कौन भरेगा ? तुम तृष्णा की तोख(एक बहुत बडे लोहे मे सीकड बांधकर,पूर्वकाल मे जिसे बहुत भारी सजा देनी होती थी,उसके गले मे पहना देते थे,उसे तोख कहते है । तोख छोटी,बडी होती थी,बडी तोख पचास पचास मण की होती थी,ऐसी तोख गलेमें डालकर,माया के संग,माया का गुलाम बनकर फिर रहा है,अरे तुम जिस समय माँ के गर्भ मे थे,वहाँ आठ नौ महीने तुम्हे खाना लाकर दिया । वहाँ गर्भ मे तुम्हारे पास क्या धन था । और खाने के लिए क्या सामान था । वहाँ(गर्भ मे तुम क्या उछल कमाई करके लाकर खाते थे । जिस समय तुमसे एक अँगुल भी इधर से उधर नही हुआ जाता था,उस समय भी तुम्हे वही खाना पहुँचाया । और जन्म लेने के बाद तुम्हे दाँत नही थे,तो तुम्हारे जन्म लेने के तीन महीने पहले ही माँ के स्तन मे दूध उत्पन्न कर दिया । और बाद मे दाँत निकलने पर तुम्हे अन्न देने लगा । उस समय तुम कमाई तो कर नही सकते थे । ऐसे अपंग अवस्था मे तुम्हे खाने के लिए दिया,अरे जीवा देख,जंगलो मे पहाडो मे पेड है,वे पेड जन्म लिए उसी दिन से,एक ही जगह खडे है,वे कही भी उधम करने नही जाते है और एक अँगुल भी इधर का उधर सरक नही सकते है । जन्म लिए उस दिन से एक ही जगह खडे है । इन्हे भी वही जगह की जगह जीवित रखता है । मारवाड देशमे बहुत सी जगहो पर ढाई सौ,तीन तीन सौ हाथ गहरे कुँए है । जिस जगह पर तीन सौ हाथ गहराई तक पानी का पता नही है,उस देश के जंगली वृक्ष कैसे जीवित रहते होगे । वे वृक्ष गर्मी मे भी हरे भरे रहते है,उनमे फल आते है । केर और सांगरी गर्मी के दिनो मे फल लगते है । तो उन

वृक्षो मे फल फूल आने के लिए रस कहाँ से आता होगा । उपर से धूप लगती और नीचे जमीन तपती है,ऐसे समय मे नींब आदि पेडो के फल आते है । और अनूप देश मे आम, जामुन बगैरह फल गर्मी मे भी रसदार कैसे उत्पन्न होते होगे । आम,जामुन बागायती पेड नही है,ये उपर के पानी से ही जीवित रहते है । ये पेड रहे,परन्तु बेर के वृक्ष मे कोसला लटका हुआ रहता है,उस कोसला को लोग हाथो की छडी मे बाँधते है,उस कोसला के अन्दर एक प्राणी रहता है । उस कोसला मे सुई घुसने इतना भी छेद नही रहता है । तो उस कोसला के अन्दर का कीडा क्या खाता होगा । उस कोसला मे उस प्राणी की वह खबर लेकर उसमे ही उसे पहुँचाता है,इसमे आश्चर्य की बात यह की,उस कोसला मे उसे किस रास्ते से पहुँचाता है । इसका कुछ पता नही लगता है,फिर हम सब तो चलते,फिरते,बोलते और हाथो से काम करनेवाले है),सतगुरू सुखरामजी महाराज विचार करके कहते है,कि जिसने गेहूँ बोया है,वह उस गेहूँ को कुँए का पानी निकालकर अपने आप पानी देगा ।(पानी देनेवाला जैसे पानी देना चूकता नही,वैसे वह भी सबको देता है । क्योकि उसका नाम विश्वंभर है,वह विश्व का भरण पोषण करता है,इसीलिए उसको विश्वंभर कहते है । ।।३।।

।। इति बिस्वास को अंग संपूरण ।।